पच्चास वर्षों के आर्थिक सुधारों की स्थिति

सन् 1991 से उदारीकरण और आर्थिक सुधारों के जिस दौर की शुरुआत हुई थी, उसने बहुत सी देशी कंपनियों का बहुत उत्थान किया और कई भारतीय कंपनियां बहुराष्ट्रीय कंपनियां बन गईं।

सॉफ्वेयर उद्योगों ने बहुत प्रगति की। इसका कारण यह रहा कि भारत ने ज्ञान आधारित उद्योगों और सेवाओं को बढ़ावा दिया। वहीं श्रम आधारित उद्योग पीछे रह गए। परिणामतः कार्पोरेट क्षेत्र आसमान छूने लगा और सार्वजनिक क्षेत्र की अहमियत खत्म हो गई। इन सब बातों के बीच हमने जो खोया, वह है- सामाजिक उन्नति।

- सन् 2004 से 2012 के बीच 13.8 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर आए, जो अपने आप में एक विश्व रिकॉर्ड है। इस बीच सामाजिक विकास की दर बहुत कम रही। यदि अर्थशास्त्री अमत्र्य सेन और जीन ड्रेज़ की मानें, तो विश्व में जितनी भी अर्थव्यवस्थाओं ने करामाती प्रदर्शन किये, उनमें भारत के सामाजिक विकास की दर सबसे कम रही है।
- शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों की कमी एवं उनकी अनुपरिस्थिति पिछड़ेपन का एक बहुत बड़ा कारण है। गरीब जनता भी अपने बच्चों को महंगे निजी स्कूलों में भेजने को मजबूर है। सन् 2009 में पी आई एस ए के 74 देशों के सर्वेक्षण में भारत सबसे नीचे स्थान पर था।
- शिक्षा जैसा ही हाल स्वास्थ्य सेवाओं का भी है। स्वास्थ्य पर होने वाले खर्च में भी भारत नीचे की पंक्ति में ही आता है। देश के कई क्षेत्रों में रक्तअल्पता 80 प्रतिशत है। विश्व के कुपोषित देशों में भारत के ये क्षेत्र बहुत कुपोषित हैं। खुले में शौच के कारण डायरिया जैसी बीमारियाँ फैलती हैं, और बच्चे कुपोषण का शिकार होते जाते हैं।
- सरकारी सेवाओं की हालत अत्यंत खराब है। सरकारी कर्मचारियों को जल्दी से बर्खास्त नहीं किया जा सकता। इसके कारण जनता के प्रति उनकी कोई जवाबदेही नहीं है। वहाँ विशेषज्ञों की बहुत कमी है।
- पुलिस, न्याय, बिजली, सड़क, जल-संसाधन तथा स्वच्छता विभाग दयनीय स्थिति में हैं। एक भूतपूर्व पुलिस अधिकारी ने तो यहाँ तक कहा कि 'पुलिस का पहला काम राजनैतिक विरोधियों को प्रताड़ित करना है और दूसरा सत्ताधारी दल के अपराधियों को बचाना।' कानून और न्याय की भी यही स्थिति है। आज इतने मुकदमे लंबित हैं कि उन्हें निपटाने में वर्षों लग जाएंगे। इसके अतिरिक्त अपराधियों को राजनैतिक शरण

मिली हुई है, जिससे सामान्य जनता को न्याय नहीं मिल पाता। सन् 2014 के चुनाव में जो सांसद चुने गए, उनमें से 186 पर आपराधिक मुकदमें चल रहे हैं।

अर्थशास्त्री एस्मोगलू और रॉबिन्सन ने स्पष्ट रूप से कहा है कि किसी देश को मध्यम से उच्च आय वर्ग में आने के लिए चहुँमुखी विकास की जरूरत होती है। भारत को भी अपने बहुत से क्षेत्रों में सुधार की एक लंबी लड़ाई लड़नी है।

'द टाइम्स आॅफ इंडिया' में श्री स्वामीनाथन एस अंकलेसरिया अय्यर के लेख पर आधारित